

DPN 6787

दोहा, कृष्ण स्तोत्र व विक्रमादित्य राजा कथा

DOHĀ, KṚṢṆA STOTRA WA VIKRAMADITYA RĀJĀ
KATHĀ

Title :

Run. No. 7512

Cat. No. 7

Micro. No.

Subject Song and Story.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. / Hindi

Size in cms. 20 x 14.5

Folios 28

Lines (in a page) 16

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

बाबानानी वैद्य, रूप

Date: NS / SS / VS / KS 1032, 1968

Ruler / place Baba Nani Vaidya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Khawapa

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. श्री गरुडेशाय नमः ॥ अथ दोहा लिख्यते ॥

P.T.O.

फुल फुले तो सुगन्ध राज, वाशना आये मगमग
बाह्र वर्षाके जमान तेरी, इसको जागे आस ॥ १ ॥

कृष्ण स्तोत्र

col. सम्वत् १९६८ साल वैशाख ४ गते रोज १ शुभम् ॥

विष्णुमादित्य राजा कथा

col. इति श्री विर विष्णुमादित्य राजा कथा नाम पुतलीका भोजदेव राजानं
- - - - - सम्पूर्ण शुभम् ॥ ३३ ॥

सम्वत् १९६८ साल श्री नेपाली संवत् १०३२ साल जेष्ठमासे शुक्लपक्ष
चतुर्दशी पूर्ण तिथी बुधवासरे तत्दिने श्री भक्तपुर नगरे मध्ये टेबुकुछे
देव धालेमा ~~खे~~ वासी जगत प्रसादेन लीषितं स्तोध्यती शुभमस्तु ।
सर्वदा काल शुभम् ।

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ दोहा लिख्यते ॥ ॥

× फलफुले तो सुगंध एज वाशना आये मग
मग ॥ बाह्य शक्ति जु भनते रिह्म कोला
गे आल ॥ ॥ शुभ ॥

× ता ए भये गगन मगन जु न भये पद म फल
॥ मिवा पाके रस बुहे चाक्रे वाला वरे डर
॥ ॥ शुभ ॥

× दुर्लभ आया ज्वाहरे प्याशला गजल ॥ वा
ना पिना कु छ नही विना स आवे गाल
॥ ॥ शुभ ॥

× श्रवण स्त्री उधर गस्त्री को उ गस्त्री बलिजा
उ ॥ जल कि प्याशला गी हे शशी जल कि
था उ वता उ ॥ ॥ शुभ ॥

× वाशिष्ठान कि रस नही क पीला फल कि
वाल ॥ मती हमारे जो खए बीत तुमारे
वाल ॥ ॥ शुभ ॥

× अम्बा पाके लरिवरी दारिद्र्य पाके लाल ॥ मे
वा पाके रस बुहे तो के बाला हज्जार चाक्रे वा
ला वरे डर ॥ ॥ शुभ ॥

× अम्बा पाके लरिवरी जु न भये वग फल ॥ मि
वा पाके रस बुहे चाक्रे वाला वरे डर ॥ ॥
शुभ ॥

× पोवा पंछि गमन चले सिकार पोर कि प्रिति वाग
गाजलिये के ये के लाज्जने भी कार

× जल पीवे त जल पीवे नै नाला गी मन छुल
हे मन हि वृष का धातु म क विफल की फु
ल वृष हि तो रौ वृष हि मारौ वृष हि जल भर
माई विता वृष कार शत हिले के कै स्तर्फ
से जाई घर धार

× पतान गावे न चारि शिव सिव बोले पंछी
न गा उजार जता धार कुलवी गारतारि
या

नारायण गगन मगन जु न भये पद फल मिता

काहाबदनकाहामलिजाकाहाशबनिर
जोओ अवस्तापरे किमोमोशहेसरि

उषुवारिनपस्यंतिपस्यंतिअथवापस्यं
तिऊषुफलनभक्षते

हेगौरिअमृततमेनैनाविशुलिशमार
जित्काकारनप्रातहीत्यागेलोउथीभेद
भये

कागतकातेचौघराअक्षेलेखुवानघाई
फातेओखधीलगितचितफातेकाहापाई
न

कचासुपारिकचमचबोलेपकालुपारिखुवला
लकचालोसगतकोतोहीनआवेगाल

तुमताहाकिहमजाहाचितरहेनहोनथाईतुम
घरवारिवेथरहोकिहमपेदेशिजलीजा
ई

भीगशोशायनमो॥ ॥अथकृष्णस्तोत्र॥

भुजतवेशवयोतिप्रिजमलेलक्ष्मीदुनजा

हातिप्रिनिमिले॥मिहनीहारहेप्रानधर्द

नतिमिरिदुतसर्वेषोजिगददुन॥ १ ॥शर

दुमाकमलवेशपत्रलेश्रीहरिदिन्यातिप्रि

नेत्रले॥सुतनाथंहुहामिहासिकोवधदुन्या

कामदेधिको॥ २ ॥वृषावेसभयोव्यालुदुत

भोविशुलिअग्निभोआधिभोरिभो॥मयकि

लेनतिलोकभीतीभोरशतिहारभयोयेति

दुस्वभो॥ ३ ॥तिमिरह्यानद्योपुत्रगोपिका

हृदयसादिहोसर्वदेहिका॥विधिकिविती

लेलोकपालदुभोयडकुलैविषेजन्मभैगयो

॥ ४ ॥अभयभैगयोजन्ममृत्पुकोचरनघोम

माहामीहासिको॥करकमलधरिदेउमाध

मालक्ष्मीकाप्रतिलाथहातमा॥ ५ ॥दुनकि

दुःखहनविराजिकामतसगाल्याहामिगोपि

का॥ गभजनतिमिदाशिभंददत्तकमलहे
अललहेनशौवदत्त॥ ६ ॥ नमृतभगतको
पनाशान्यागोपछीहिडिलोभमानकु
म्ब॥ १॥ वरनकालिनागमाथिरामिमाध
एकवैउपकाममन्त्रकुम्ब॥ ७॥ मधुरश
दलेवेशबोलिलेबुद्धनिहारकाबितचोर
ले॥ अकलगुम्भयोहामिदाशिको॥ एशमि
लाउहेकृष्णऔंथको॥ ८॥ अमृतहोक
थाडुःखवितन्याप्रभुशराउन्मापापकात
न्या॥ रिशिलुहाउन्मासुन्नवेसकुम्ब॥ भजन
गार्डन्यापुम्पवेकुम्ब॥ ९॥ पिरतिलेनजगर्तु
हालतुसमरीएषतुवेशकुम्बवेसकुम्ब॥ १०॥ हा
हाबुकीसमहिहामरोकलपिजादमन्त्रकुम्ब
शाबलो॥ १०॥ गउचहाउदेजातुकुम्बदत्तक
मलहेनरमलालपाउदत्त॥ गरिदिनरतिप्याल
नेत्रपुम्भर्भभनितहामरोपगलिजादमन्त्र॥ ११॥

दिनविपदीनिलकेलपरि कमलहेवदनशो
भमानहरि॥ १२॥ दशदानगरीधुरिधेधरीद
द्यमादियोकामशौभए॥ १२॥ नमृतका
तहितबुलपुजिन्याधूमिलुगारन्यालम
किवेशकुम्ब॥ वरनरूपकमलसुषलम
दिन्याधरकुम्बउपदेदहदिन्या॥ १३॥ रतिव
ठाउन्माशोकमाशान्यावकुतवेतुलेरमजोप
ईन्या॥ अरुकराशवैविर्शिजाईन्याअमृतओ
ठकोशौमिथोकुम्ब॥ १४॥ अरतिमारतनग
दछौजसेतिमिनदेविदामन्त्रुष्याउले॥ धु
गुरकेशलेसुंदरिवदननजगर्तुशौनेत्रको
बलन॥ १५॥ पतिपुत्रकुलभाईबंधुनमन
जिकुजाहातिमिताहिवाउददत्त॥ मिलनघो
मददत्तगीतलोमिदत्तयुवतिलार्शकोरनिदो
ईदत्त॥ १६॥ विजनजानिन्याकामजमन्याव
दनराशान्याप्रेमजहिन्मा॥ लक्ष्मिकोतिवाडा

20

15

10

5

0 CMS 5 10 15 20 25 30

॥७॥ श्रीगणेशाय नमः

हृदये देवीया कलपि जाइया मनमगन दुन्या
॥१७॥ वृजनिवाशिकोडु खड्डुन्या तिमरि
मूर्ति हो लोकपालाया ॥ परनाउ छिन हाम
समस्या हृदय रोग को हर्द हर्दिया ॥१८॥
यस्तै तिष्ठि चरण को पल जो कुचै मा र्मा निह
मि हृदले मिलीया कथिमा ॥ तैस्तो छ चर्ण
कमले वन मित्र जा छौ मन पुग्छ हामि हृद
काति प्रामनेमा ॥१९॥ इति श्रीभागवते म
हापुराणे गोपीकृष्ण कीदाया गोपीकृत भा
षाशोक सभा प्रभुभू ॥ संवत् १९६८
सात वैशाख ४ गते ऐश्वर्य शुभ

शुक्लरोमे

जिस्वां मि कुसि
विपला गुर्जो-
आलेह दाख
कान्ति

श्रीगणेशाय नमः ॥८॥ ॥९॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ त्रैलोक्य कानाथ हरि नि
लार्इ सिलेन मल्का र्गा भिक्खि लार्इ ॥ शास्त्र
र्थ को शर्फि नि कि धर्द दन चान करि पित्त जनि
तिक हं दन ॥ १ ॥ यो सास्त्र को तत्त्व बुझे जस्ये
ले ला जउ न धर्म अधर्म त ज्ञे ॥ जन्मा शुभा
शुभ विचार गयी हो ला जसो सब तप हर्मा
॥२॥ मनुष्य को बेश हित गर्ने लार्इ यो शास्त्र
अहे कहियो वतार्इ ॥ यो सास्त्र ले वधि गरी
श्रीने पातलै ६८५ विक्रम ६२२ सात मास ३५५१
तिथि १२ १९६८ नये त १७ योग ३३ वार ४४ मर्णा १ मुकत प
चाइ मानेन आसाठ उरुन धाडती ५०१४६ अग्राधा
५५११५५ ४२ मोगे पुनवासे ॥ ११११२१ ॥ ११५
पुनर्जने ॥ श्रीसूर्यावरतधत् १०११४ तडा मोन मीत
सी ६८११ १०१११११ के कीती मेडे काणे १०६१
आई ६८११ इति जमा पुत्रो जात ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
वीरवीरमाजगति पौर्णमासी १९६८ ॥ ॥ ॥

लीनयथापादवी (ले) उधीलाई सी उपाडिगीमा उधीलेमंष्ट
 तीनी (स) आईगाइ पुपुपो डुपनमा मरिआपुनाय उगाईरुता
 हाप्रात वधीपाडीतसापेता ॥ उहादेवसंग मीलाप्रा उडाई
 लामंसा नीमंष्ट देजापमेडेडा मा वरममं डंष्ट मया अहे
 प्रेसोक एतथुमादेर वरमं कलै को पुषदेयी देर मे एवसम
 को वधी वीयाको छ १ वरमं छी तीप्रो उधी ॥ कडाचीत वलगा
 यामे उधानयागगंनता मनी वधीपा दो मनी सर्वाका वलं पाए
 या एनीमनी पडे सीगरी आउ छती लाई सडावर्तकीनला मय मेले
 त (दे) सीगा ॥ उईगा वडीतमा डुनना आई वनिमापा ए एनीले मनी
 ईक्षा भोजन मंगी डी ईरु ४ भाग लाई २ भाग बाई १ डाम्पुलाई
 मनी म्हायाको डेया एतव एनी मंष्ट देमहापुपुपुती मी दृष्ट को हो
 ४ भाग लाई म्हाया बाई १ भाग म्हायाको का अर्थले हो मनी
 मीधीत वरमं नी चाई मंष्ट देमहा एनी हा मी दृष्ट ४ भाग पडे स
 लामिआपाको कुंवापुमा १ वाग म ए (ह्य) को दे म्पु एतेसवाग लाईगा
 म्पु वाग लगाव एजा मेती (ह) मी मेकाती एपयो एजाको माग
 एजाको हो मया ए एनीले एजाको अं गुथी मीनी दृष्ट लाई डी ईरु
 मीनीले मनी अं गुथी लीलाति मा एनी वडावी ए (मं) गं दृष्ट लाया

एनीमंष्ट देमा हापुपुपु देजा मे एवसम डुपनमा मनी दृष्ट मीनी
 मंष्ट देजा देजा को म ए (व) धी पा ॥ ए (व) धी को दृष्ट मनी
 मो धी द एनी मंष्ट वधीपा ॥ ए (व) धी को दृष्ट मनी अधी मयाको
 वीला मे वै कही म मीनी ले दो हा ए मला को प्रती वनाई (जा) को
 म ए (व) धी (ह्य) को दृष्ट म वलगा एजाको नला ॥ एनी धी
 लाई मनी अहामो लोहा (ले) म्हायापुको प्रती वनाई ईरु मी
 मो एजा को म ए (व) धी को नला दृष्ट मनी मीनी धी कल्ला ए मीनी
 ले कमी लाई धी हा वनाई मयावेना मपो मीकांको धी हा वनाई
 एनी मीनी कमी लोहा ए ४ भाग धी हा म चस्ती मंष्ट मीनी ए (व) धी
 को धावग ए (व) धी देजा मयाका बाई मा पुपुपा एजा ए (व) धी को
 धाई माग देजा लाको नला डेया ए मीनी ले मंष्ट एजा लाई म
 गापा एजा मंष्ट दे मीनी ती मी दृष्ट कलेग एजा हा मा मी मंष्ट
 अधी डेजा मयाको वीला ए मये कही एजा वरु अश्च मीनी ए
 ह्य दे एनी धी प्रा डे मीनी कु मी एजा एनी मीनी कमी लोहा ए
 पूजना ले मतो ग ए वधीपा रवीगवीग वलगी आहना एजा म्हा
 कोरु को डी डी मया आहना डेडा काननी कपुगी मय ए ग ए मया
 एजा ले हो एजा पुपुपु मनी वडावर्त माग ए अनेक र लोका म्हा

श्रीगणेशाय नमः ॥ अगस्त्ये वाचा ॥
 अगस्त्यश्च पुलस्त्यश्च वैशंपायनमेव च ॥
 सुमनुजैर्मीनीश्वैर्वर्चयन्ते वज्रवारुणाः ॥ १ ॥
 पुनरेकत्मानमीव श्रुजैर्मीनीश्वरीकीर्त-
 नात् ॥ वीरुदग्रीभयनास्तीतीषिते च गले
 इरे ॥ २ ॥ यत्रानमयी भगवा कृपया स्तोह-
 रश्चिह्न ॥ भक्तो भवती वज्रस्य तत्र शूलस्य का-
 कथा ॥ ३ ॥ अंतो वायुकी मज्जी महापद्म
 यतश्चक्रं ॥ कुली कुर्वतः शङ्खो श्वास्त्रे
 नागा प्रकीर्तिताः ॥ ४ ॥ कुक्कुलानगद्विह-
 दा यत्र लोपूजीता गृहे ॥ नमवेद्विषं शर्पा
 मी ॥ वज्रोत्पातमयै कवीत् ॥ ५ ॥ शर्पापु-
 शर्पमर्द्रतः ॥ वृवरीतटे ॥ नूनमेव यत्नयता
 ते ॥ आलोकववर्षा ॥ ६ ॥ शतधा मीध
 ते सुध्री ॥ शिंशिवृक्षपुल्लयथा गीवावायसी
 वा ॥ ७ ॥ गीवावायसी मयं कवीत् ॥ ८ ॥ अली

धीर्वाचं शिर्षिकं प्रीतिविपत्तिष्वेव ॥
 १ ॥ अलक्ष्मीलभते लक्ष्मीं प्रमाया लभते स्त्री
 यः ॥ ८ ॥ कामार्थिलभते कामी मोक्षार्थि प्राप्नु-
 १ ११ २१ ३१ ४१ ५१ ६१ ७ ८ ९
 २ १२ २२ ३२ ४२ ५२ ६ यागती ॥ मुनीलो
 ३ १३ २३ ३३ ४३ ५३ ६ मसमृगी च तथ च
 ४ १४ २४ ३४ ४४ ५४ ६ वेदव्याशङ्का ६ ॥
 ५ १५ २५ ३५ ४५ ५५ ६ नरातीरसनाथीय
 ६ १६ २६ ३६ ४६ ५६ ६ धुराविधो ॥ नमा
 ७ १७ २७ ३७ ४७ ५७ ६ धिरे ॥ सर्वानार
 ८ १८ २८ ३८ ४८ ५८ ६ सनार्थे न मुनी
 ९ १९ २९ ३९ ४९ ५९ ६ सर्वनाधिरे
 १० २० ३० ४० ५० ६ ॥ मेक सप्रअ
 होमूमी आवरोप्य मे सिते ॥ कोप्य अम्या
 शोभवारि न कश्चाशो भिङ्गुलं शुभमूनी ईति
 श्रीविक्रम सभ्यत् १९७७ वसात् १ मिति

20

15

10

5

0 CMS 5 10 15 20 25 30

॥१॥ जाले सर्वविजयमया को जाते तु मा धा पो धन च नीला
 म हा पो अवमो रवी जने उ धा न नि म हा ई ज द व स म मो उ उ जो ले
 प्री प्री पंच व तो दी गो ध्या क से ले सो हो म नी थ द उ न स के न र
 ॥ ज म ॥ म मा न उ दा स मौ हा का थो जा मो नी वे उ दे की उ ध्या का ग नी
 ला र नि गु पा नी जी न नी मा ला नी को पु म र्जि ध्या हो दे ध्या उ ध्या ज नी
 पु म र्जि ध्या उ ध को न हो म नी तो ध्या आ ग क क दि श का उ गा न म र्जि
 न म र्जि ध्या दी म नी उ त म धा को व र्जि ध्या ॥ जाले प्री प्री पंच व तो
 नी सो ध्या जी न्या को ही थ ह रे न न राजा म हा उ दा स ई द्रो मे रा
 सु ष अ ध्या रो द म दा म र्जी को ना नी म र्जि न हे मा उ ज्ज्मो म ही दी
 ई ला म र्जी को ना नी छ म नी ति मी ले न क ह्या सर्व वि ज न म्या
 को मा तो हो सर्व पु स्य म न्या को क पा स हो ई र थो व दी प था
 उ नु म न्यो र स्वा ह नी गे रा जा छे उ वि ती ग र्ध न हे म हा राज त म्
 को अ र्थ म क र्ता उ दा स न मे सु तु व स म नी क ह्या सर्व वि
 ज न म्या को मा तो हो सर्व पु स्य म न्या को क पा स हो म नी र राजा
 ले मा तो क पा स र थो क र ची थी दु त ला ई दि वी दा ग र प था
 ई र उ त गे आ फ ले ले ग था को ची थी र ची ज च द ई र राजा ते स

को म नी अ क र हा छ न म नी को ही दि न मा फे री ची थी ले पि
 र थो दी प था या दु त गे रा जा छे उ ची थी सो पी म र्जि न हे म हा
 र थो र थो दि मा भा उ व दे री धु त्पा ई दि नु ह व स म नी ची थी
 मा ले पि था को दु त ले म न्या को सु नी रा जा ले आ फ ना म र्जि
 पंच व तो ली सो ध्या क से ले थ ह र उ न स के न र फे री रा जा
 ले उ से स्वा ह नी छे उ म र्जि न हे स्त्री थो थो दि मा भा उ व दे
 री धु ती ये न क सो ग री धु ती ये ला म नि सो र्ध दा स्वा ह नी म र्जि
 हे म हा राज उ दा स ई उ प र्दे क ती ते क र्म ग री ज्यो ना र्थ उ व स
 म क र्ता म नी व र्जि न उ ही म र्जी का ना ती ला र्थी था स ॥
 ज म ली पु व र्जि सो ध्या हे ना नी अ र्का देश का रा जा ले थो दी र
 भा व दे री धु त्पा ई प था उ दे उ म नी प था या का छ न म र्जि
 क सो ग री धु त्पा ई या ले म र्जि न म र्जी का ना ती म र्जि न हे मा उ
 ज्ज्मो म र्जि न हे मा नु प र्दे क ति र थो दी म र्जि न र वा पी था
 सु दि तु उ नु क र उ न्या भा उ न क र उ न्या व दे री म नी क ह्यो
 र थो स्वा ह नी रा जा छे उ गे वी ती ग र्ध न हे म हा राज ति र थो
 दी धु त्पा ई या सु दि तु नु क र उ न्या भा उ न क र उ न्या व दे

分

[illegible]

Handwritten text in a cursive script, likely a continuation of the previous page, starting with "והוא" (And he).

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

20

15

10

5

मेलानात्रमनलाग्नाफेरिकपकोटिवाठमित्रकार्पदीतलेश्लोकव
चनलाग्ना॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्लोक॥ मित्रडोहीकर्तृयस्यमेनविश्वासधापका॥
तेनरत्नरकमांतिचावर्चदिवीकर॥ १ ॥

अस्यार्थ॥ देवदाराजसुतुवस्तुमित्रडोहुरविश्वासधापक
गयाकापात्रलेदुर्तेलाईतुमयेजेहूचंदसूर्य आकास्माई
छत्तेस्तेनासूर्योपापदुर्लार्इनागीरईछमनिनमारुतव
राजाते३अक्षरेर्मनछाया लायेतामात्रमनलाग्नाफेरि
कनश्लोकमित्रवाठर्पदितलेश्लोकवार्चनलाग्ना॥ ॥ ॥

श्लोक॥ राजानोराजधुवस्थचदिकल्पनविषयती॥
देहिदानीछिजातिनीदेवताराधनकुत्त॥ १ ॥

अस्यार्थ॥ देवदाराजपेलांपाषाणुत्पाठियाउपायितनम्यावृष्टि
गात्रपिजोगीमिश्रुकअनेकरतरदकाजोगीआसगर्वादे
कलाईरागदिहृतिसेदेवतापूजागर्कुंगीगह्वागर्कुनित्त
महादेवपूजागर्कुदलेगर्कुदेवताकोपाठगसुठकुप्रराह
आदिस्तुतुदुर्गकर्वादेवाह्म्याह्मसर्वेलेयतीकजगर्गुस्थोमा
पतिमिताईईयाछिगमन्याविकैराजातेलमिमेलामनछा
याअधिकामेजलाकोमलोभैराजालेश्लोकवाचनलाग्ना

श्लोक॥ गह्वरशतिकोभारीअत्रव्यानवनेदिरे॥ ॥
अधियाधुमनुधानीकथजातिकेसेवकु॥ १ ॥

अस्यार्थ॥ राजाआग्नागर्दिहूदेकभारीहामिदृक्कवननामाहु
वाचन३जनालेमात्रजीयाकाकगतिमिधर्मावर्षीकसोअ
मैलेदेगीआमाजेहीकलोगराजायोभैदाफेरिकपकोटिपि
त्रवाठर्पदीतलेश्लोकवार्चनलाग्ना॥ ॥ ॥ ॥

श्लोक॥ देवगुत्प्रसादेकममजिह्वासस्मृती॥ ॥
तेराहममजानातिभातुमत्यातिलक्यथा॥ १ ॥

अस्यार्थ॥ देवदाराजदेवतागुत्काप्रसादलेभैराजिध्राना
सरस्वतिवत्याकिछत्तत्कारकलेपोभैतेनादुमतीराजिका
अगम्यजगानाकोधीछमनितेपायाकोहोमन्यारराजाते
मैछत्तेलोमयातिमिवाछिहोईमोमनिभुक्तफकीकई
डीअदितलार्कदेविमामकारुगन्यारजालेपदितलार्गार्क
मैहगरअनेकरशिरीमाईदिसुपअर्दकसितरच्यादेराजा
भोजदेवपेलांपराकमीराजालेपनीनानीराधाकाभैराजा
वीरवीकनाजीतकापोसीदाशतमातीनीलेवछुजेगेदेक
मनीकसुनावतीनाकपुतलिकाउदिगेहू॥ ईतिवीराजाविर
विक्रमादत्यकथाप्रभोजदेवराजाकमुभावतीकामपुतलीकाम
सैवादेवकीपुतलीकामचोदेकनीदानीकथातमाती॥ ३१ ॥

भेरी वसंत भुवनाम वतिलोपतलीका नीकी कन मंदिर राजा भोज
 देव भगवत् पूर्व को योता कथा कहें छुखुन राजा वीक ना जीतका अती
 प्रीय भया का आकृता निवधि जा कहि गया पनी वस्य पनी पनी
 दामा पनी वध दित न छोड़्या यसे गरुट्टा वस्तु वदित भाभ
 रमारदार पंच ड निजा लोक लाकर जावतो ली राजा भेरी सी
 कारु खेल गया वन मा पुपार सी कारु खेल लाग्यो तेला वी
 चमो राजा रमवी लाई घोडा ले डो दार् म हा अघोर वन मा पु
 मायो भारुडार लोक पंच ड निजा सबै फर्का राजा भेरी फर्के
 नरु राजा भेरी हे भेरी समुद्र को पानि लाई कन भलाई पुजा
 उदे भेरी भेरी ले आये डा ली समुद्र को पानि लिन न निग
 या भेरी ले पानि ली फर्कि कन मंदिर दे न हारु जाये समुद्र
 मा यो तारु गंगा भया को र देह भया र राजा भेरी हे भेरी ते
 सुगिला लाई वाधी वगाईया मुकी गर मंद न भेरी मंदिर को
 गरी वगाई भेरी राजा भेरी हे भेरी न भूत सजीवी नी हुने न
 न न जांद छु यो विद्या त लाई सी का उछु न निरा जाले यो वी
 डा भेरी लाई सी का था भेरी ले आ फटु मरीर छाडी भया
 कारु गंगा मा पयो रोगा वाट नि की फेर आ फटा सरीर मा
 गेर जा छे उ भेरी दे न हारु जा भेले यो रोगा लाई नी की व
 गा उछु सके न भेरी राजा ले आ फटा देह छो दि भया कारु
 गंगा वाट गे समुद्र वाट उत्री पापामा हिडुन लाग्यो
 यो भेरी ले देह अवगजे को मो विलास गंग ताम भेरी

भेरी ले आ फटा देह छो दि प्राण राजा का देह निव पयो आ
 फटु देह मा कर वड ले पंदर पा र घोडा चवी भेरी आ फटा दे
 सना गयो रोगो भेरी का राजा ले रोगा वाट छो दि आ फटा
 मरीर मा पक्ष भेरी आ उडा आ फटा मरीर पाये न भेरी को सरी
 र पंदर भया को दे आरु डा प्राण २ भेरी ले ला पा नी छलाई भेरी
 ये लो वी था सी काई यो विपती मेरो भयो भेरी आ फटा कल देव
 ना ई देव ता सभ ही वन वन पर्वत २ छुका २ भवता हा २ भुगो
 भया को दे यो रोगा को सरीर छा दि भुगाना पयो र आ फ
 ना दवार को था फ मारीर वस्य कि थो देह उडी वही वड गया
 र गंगा छे उ भेरी दे भेरी भेरी व कल सुन मंदिर अती कल जाया लुगा
 देह भेरी समानि पिंजर मा राखि भुगा भेरी दे रानी ति नि छे उ
 यो छ विला गी दु सुन मंदिर रानी भेरी न दे भुगा भ निश्चय ति
 नी ले भया को गमना भेरी सुगा ले अरु क दल गयो दे रानी
 न राजा हु भेरी लाई भूत सजीवी नी विद्य भि ले सिका जा त भेरी
 आ फटा मरीर पंदर पा र मेरु सरीर निव पसी त सीत भुप भेरी
 गंग न भेरी आ ई देह भ निव ता त सबै कछा अव दे रानी ज से त
 लात उछे भोग विलास गंग भोज ता ते स्वेता भदि म हारु ज
 भुले म लाई भूत सजीवी विद्या सिका उछु दे भूत सजीवी उछे वेता
 मा भ मा हता भ निश्चय भया कारु राजा ले भया र य से विच
 मा सिकार गया कारु राजा आया पा वर व वा र ग गि च लाई

कुमारी मर्वेभारुपीक गौंदरीक गयाराजा भई नृदेव दुनीजा
होवनवाठगीनिल्याभाकुलतीनरी राजा देवा मर्वेदरीक
गयाराजा भई नृकोठाभा गयाराजिसं गौं पडीया भावल्या
राजिले शुगालाई लुकाई राखिथी दुराजा लेहेरावी शुभ
संभोग गहं भनि राजा पडीया भा लुका राखि भई दुरादेव
दुराज दुकपिया राखु मया मृत संजीवीनी विशांभना
ई देवा ईसिका उंदु देव सुभनिक राजा भई दुराजी मलीका
ई दिउता १ वोका भात्रचा ई दुरा भई राजिले वोका वल्या
ई दीया राजा ले वोका निभूथी भारि आ फना सरीर वाउज
निका वोका भारी राखी भा मों गें पली उंई नर देवाभा
र शुगाका सरीर वाउज निका वोका भा सरीर वाउज
सरीर वाउज निका वोका भा सरीर वाउज
राजा मया दुरा राजा विक्रमजीत आ फना स
राजा मली पडले वोका लई काती आ फली आ
फना राजे नारु पसीतो फ सिर रखा येस्ता पराक
भा राजा विक्रम दित्य का सी हि शरुना हेराज भो
ज देव तिमी ले वदन जो गेये क मनी वसीत सुधीना
मा पुतलीका उदीगेरु मईती श्री दुराजी शरीक था
म मई ॥ ३५ ॥ के रा गज भूषी नाम ते तिलो पुक
लीक नी का कनई दे हेराजा भोज देव म पुपुवक
था मई मत्र क ई पु सो दुरा राजा ईड का पु

जय रति मया क राजा वडा धता पीधी भा मोती राजा
क्षमई ल भा आ ई दुरा मया तात को वतुन नाग राजा को पुनी
पनी मक्षमई का मचंभा आई वल्या ये लो वेला ना लो वे
देव लोक वतों ली नाग मई दल का मध्य भा पंचमूत ले पुक
ग रा अनी मई दल भा ज्याला ले जा जो ल्प भा न गरी रखा का
था उं मा इने राजा श्री विरवी क भा जी क गौंदरी वतुन नाग
राजा आभा ग ई दुरा राजा वी क्रम जी क तिमी ले मेरा उनी
मो दग ने आयो भे ले जाया मक्षम दल भा ग या जयंतरा
जाले मो दग ग रत मनी आयो अवती भी ले सख्यानेरी पु
नी ले जा भई दुरा राजा वी क्रम जी क ले देव लोक सा सिर
पी वतुन नाग राजा का पुनी सी गत ना उडाई ले जा डा
मया राजा वी क्रम जी त के भात्र भई क्षमई दल भा आई अति
कर्म गत गरी अपसुर सुदीत पुष्यवर्षा ई राजा जयंत को वि
वाह गरी सुख भोग गरी राजा को रखा गरु लो ग गया
मनी पुतलीका ले राजा मी ग देवता ई क ई दुरा राजा मो
ज देव पस्ता ईड का पुत्र जयंतराजा ले पनी गते न सख्या
को का जय गरी जयिना राजा वी क्रम जी त को मनी पुसी मे
सि दुरा शरु उदाई ले जा ना मया ॥ ३६ ॥ ईती श्री विर विक्र
मा दित्य राजा कथा मी गत मनी ना पुतलीका भोज देव राजा
मने मेरा मो दग मनी मी मई मई मई मई ॥ ३७ ॥

संवत् १८६८ साल श्रीनिवासी संवत् १०३२ साल जे
 ५ मासे शुक्ल पक्ष चतुर्दशी पूर्णतिथी बुधवार
 तसु दिने श्री भक्तपुर नगर मध्ये छिंदु मछे गेल धालेमा
 देवासी जगत प्रसाद नदी धित सीध्याती शुभमस्तु
 सर्वदा काल शुभम्

महाराजान्तरुद्ध
श्रीराम गोपाल शास्त्रि
याहू प्रोफेसर् इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी
मुंबई नगर दारो नदियंत ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

[illegible]